मूल्य विश्लेषण प्रतिमान की मूल्यों के विकास में भूमिका

श्रीमान मंयक लिमये
सह प्राध्यापक
विक्टोरिया कॉलेज ऑफ एजुकेशन, भोपाल
limayemayank@gmail.com

मूल्य विश्लेषण प्रतिमान मूल्य विकास के लिए ज्ञानात्मक विकास सिद्धांत पर आधारित एक उपागत है जिसके अंतर्गत तर्कशक्ति को विकसित करके मूल्य समस्या के समाधान पर बल दिया जाता है। मूल्य विश्लेषण के विषय में विस्तृत जानकारी सर्वप्रथम कूम्बस् (1926) ने दिया। इसके बाद फ्रैकल (1966) ने मूल्य द्वंद के विश्लेषण के लिए एक पद्धति को प्रस्तावित किया। कूम्बस एवं फ्रैकल के विचारों को ध्यान में रखकर पासी, सनसनवाल एवं सिंह ने फरवरी, 1988 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के सहयोग से देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर में आयोजित कार्यशाला के लिए मूल्य विश्लेषण प्रतिमान का प्रारूप तैयार किया।

कल्पनाएं

मूल्य विश्लेषण प्रतिमान निम्नलिखित कल्पनाओं पर आधारित हैं

- यदि व्यक्तियों को मूल्यों के सम्बंध में अभिज्ञान एवं चिंतन करने का अवसर दिया जाये तो उन्हे इस बात का अनुभव होगा कि मूल्यों के बीच कभी– कभी द्वंद की स्थिति उत्पन्न होती है दूसरे शब्दों में दो या अधिक मूल्य टकराते हैं।
- मूल्य द्वंद मानव जीवन के अभिन्न अंग है। मूल्य द्वंद की स्थिति में व्यक्ति की समझ एवं व्यवहार अस्थिर हो जाता है।
- अस्थिरता हटाने के लिए व्यक्ति को एक उचित एवं वांछनीय निष्कर्ष पर पहुंचना होता है।
- यदि व्यक्तियों को मूल्य द्वन्द से उत्पन्न स्थिति में मूल्यों की पहचान करने, उनके विकल्पों एवं परिणामों के संबंध में विश्लेषण एवं विवेचना करने का अवसर दिया जाये तो उनमें द्वन्द की स्थिति में उचित निर्णय लेने की क्षमता का विकास हो सकता है।

शिक्षण एवं पोशाक प्रभाव

मूल्य विश्लेषण प्रतिमान की सहायता से छात्रों के व्यवहारों में निम्नलिखित शिक्षण प्रभावों को देखा जा सकता है।

1. तर्क शक्ति का विकास मूल्य विश्लेषण प्रतिमान के अंतर्गत सर्वप्रथम व्यक्ति के समक्ष एक द्वन्दात्मक स्थिति प्रस्तुत की जाती है और यह प्रयास किया जाता है कि समस्या के सभी पहलुओं को अच्छी तरह से समझ लें। इसके पश्चात् उसे विकल्पों के अभिज्ञान एवं उनके संभावित परिणामों के आधार पर सर्वोत्तम विकल्प का चयन करता है और अन्त में अपने निर्णय के लिए कारणों को प्रस्तुत करता है। इस प्रकार इस प्रतिमान के द्वारा तर्कशक्ति के सभी तत्वों (सूझबूझ, विश्लेषण, संश्लेषण एवं भाषा) का विकास होता है।

2. मूल्य निर्णय का विकास : मूल्य निर्णय वह योग्यता है, जिसके द्वारा व्यक्ति किसी दी गयी परिस्थिति में उपलब्ध विभिन्न विकल्पों में से उस विकल्प का चयन करता है जो उस परिस्थिति के लिए सर्वाधिक अनुरूप एवं वांछनीय होता है। इस प्रतिमान के अंतर्गत व्यक्ति को विकल्पों के परिणामों का मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न मानदण्डों का प्रयोग करने का अवसर दिया जाता है, जिसके फलस्वरूप उसकी मूल्य निर्णय की शक्ति का विकास होता है।
3. मूल्य स्पष्टीकरण की योग्यता का विकास : मूल्य स्पष्टीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मुख्य तीन तत्व है।

- धारण किये हुये मूल्यों के प्रति मानसिक चेतना
- मूल्यों का व्यवहारों के माध्यम से प्रदर्शन एवं
- प्रदर्शित मूल्यों का दूसरों के समक्ष समर्थन। इस प्रतिमान के द्वारा छात्रों की तार्किक शक्ति का विकास होता है, जिसके फलस्वरूप स्वयं के मूल्यों के प्रति उनकी मानसिक चेतना विकसित होती है, इस प्रतिमान के क्रियावंयन में छात्रों को एक समूह में कार्य करने का प्रावधान है जिसके दौरान उन्हें अपने मूल्यों को प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होता है। अतः मूल्य विश्लेषण प्रतिमान के माध्यम से छात्रों की मूल्य स्पष्टीकरण के योग्यता का विकास किया जा सकता है।

इस प्रतिमान के प्रयोग से उपरोक्त शिक्षण प्रभावों के अतिरिक्त निम्नलिखित अन्य प्रभावों को भी प्राप्त किया जा सकता है।

- मूल्य द्वंद का अभिज्ञान– यह प्रतिमान केवल उन्ही परिस्थितियों के लिए उपयोगी है जिनमें दो या दो से अधिक मूल्यों में द्वंद होता है। इस प्रतिमान के अन्तर्गत छात्रों के समक्ष दुविधा प्रस्तुत की जाती है और छात्रों को प्रस्तुत मूल्य दुविधा में मूल्य द्वंद को ढूंढने के लिए कहा जाता है। इस प्रकार मूल्य द्वन्द के अभिज्ञान की योग्यता का विकास होता है।
- अपसारी चिन्तन– इस प्रतिमान के द्वारा छात्रों को निम्नलिखित स्तरों पर अपसारी चिन्तन के लिए अवसर प्राप्त होता है।

(क) मूल्य दुविधा प्रस्तुत करने पर मुख्य पात्र के लिए विकल्पों को प्रस्तावित करना।

(ख) प्रत्येक विकल्प के सम्भावित परिणामों के विषय में विचार करना।

(ग) प्रत्येक परिणाम की वांछनीयता का मूल्यांकन हेतू उचित मानदण्डों के चयन के लिए सोचना।

- सम्प्रेषण कौशलों का विकास– इस प्रतिमान के क्रियावंयन में प्रमुख सम्प्रेषण कौशलों को पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना के प्रयोग का अवसर प्राप्त होता है। अतः मूल्य विश्लेषण प्रतिमान के उपयोग द्वारा छात्रों के सम्प्रेषण कौशलों का विकास हो सकता हैं।
- शास्त्रार्थ कौशल का विकास– शास्त्रार्थ कौशल के अंतर्गत मुख्य रूप से तार्किक शक्ति एवं सम्प्रेषण कौशलों का समावेश होता है। चूंकि इस प्रतिमान के द्वारा छात्रों की तर्कशक्ति और सम्प्रेषण कौशलों का विकास होता है इसलिए छात्रों की शास्त्रार्थ दक्षता का भी विकास होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- ब्रुउस ज्वाएस– मॉडल्स ऑफ टीचिंग
- सनसनवाल डी.एन. – शिक्षण प्रतिमान पे.न. 131, पुस्तक भंडार बड़ौदा
- **शर्मा. ए. के. (1988–1992),** फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिर्सच, एन. सी. ई. आर. टी.नई दिल्ली, अवस. 1
- कपिल, एच. के. 1995. सांख्यकी के मूल तत्व आगरा : विनोद प्रकाशन मंदिर
- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू एवं खान जेम्स वी 2002, रिसर्च इन एजयूकेशन, नई दिल्लीः प्रिन्टिस हॉल
- भटनागर, सुरेश 2000 शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ लायल बुक डिपो

माथुर, एस.एस. 2002, शिक्षा मनोविज्ञान आगरा : विनोद प्रकाशन मंदिर